स्पर्शशून्य है अखंड से यहाँ आशय यह है कि इसमें विभाव अनुभाव, स्थायी और संचारी आदि भावों की पृथक-पृथक अथवा अल्पांश: अनुभूति होती है अपितु सभी की समन्वित अखण्ड अनुभूति होती है।

'रस' की एक विशेषता यह है कि रस का आनन्द चमत्कार प्राण है। यद्यपि विश्वनाथ ने इस तत्व को जो अत्यधिक महत्त्व दिया है, किन्तु इतना तो अवश्य ही है कि चमत्कार का काव्यानन्द में थोड़ा-बहुत योग अवश्य रहता है, क्योंकि चित्तवृत्ति की एक विशेषता यह है कि सुन्दर वस्तु को देखकर उसमें आनन्द एवं विस्मय की समन्वित भावना उदय होती है।

मनोविज्ञान के समक्ष रस तत्व के सम्बन्ध में कुछ मौलिक प्रश्न हैं, जिनका समाधान नितांत आवश्यक है। किन्तु विस्तारभय से दिग्दर्शन ही यहाँ करा सकेंगे - प्रथम प्रश्न यह है कि क्या काव्यानुभूति (रस) अनिवार्यत: आनन्दमयी चेतना है? दूसरा प्रश्न - क्या काव्यानुभूति अनिवार्यत: भावानुभूति से भिन्न है? तीसरा प्रश्न - क्या आनन्द अलौकिक और विलक्षण है? इस प्रकार प्रश्न प्राच्य एवं पाश्चात्य सभी आचार्यों के समक्ष रहे हैं। इस विषय पर विचार करते हुए आचार्यप्रवर डॉ० नगेन्द्र ने काव्यानन्द के संबंध में ~~[illegible]~~ सिद्धांत प्रस्तुत किये हैं—

(1) काव्य का आनन्द प्रत्यक्षत: ऐन्द्रिय आनन्द है। इस मत के प्रवर्तक प्लेटो हैं और आधुनिक युग में समर्थन ड्यूबायु नोल्या है। इसके अनुसार काव्य का कला से प्राप्त आनंद ठीक वैसा ही है जैसा कि सर्कस देखने से मिलता है।

(2) काव्य का आनन्द आत्मिक आनन्द का ही रूप है। आत्मा सहज सौन्दर्य रूप है - सहज आनंद रूप है। काव्य उसी का उच्छलन है, अत: वह स्वभावत: आध्यात्मिक अनुभूति है। स्वदेश-विदेश के आदर्शवादी आचार्य इसी मत को सत्य मानते हैं। हीगेल और रवीन्द्रनाथ का यही मत है। अभिनव, मम्मट और जगन्नाथ की भी यही मत है।

(3) काव्यानन्द कल्पना का आनंद है अर्थात् मूल वस्तु और उसके काव्यात्मक रूप की तुलना से प्राप्त आनंद है। यह अरस्तू स्पेंसर और एडीसन का मत है। बीसवीं ~~सदी में~~ शती में क्रोचे ने इसी को दार्शनिक रूप में प्रस्तुत कर काव्यानन्द को सहजानुभूति का आनंद माना है।

काव्य का आनन्द सभी प्रकार के लौकिक और आध्यात्मिक अनुभवों से भिन्न एक प्रकार का विलक्षण आनंद है जो सर्वथा निरपेक्ष है। यों तो यह सिद्धांत काफी पुराना है, परन्तु उन्नीसवीं शती के अंत और बीसवीं शती के आरंभ में ब्रैडले, क्लाइव बेल आदि कलावादियों ने इसकी व्यवस्थित रूप में प्रतिष्ठा की है। यद्यपि यह सिद्धांत कुछ-कुछ रहस्यवादी प्रकृति में रंगा हुआ है और रिचर्ड्स ने इस पर कांट तथा हीगेल आदि का अप्रत्यक्ष प्रभाव भी माना है, तथापि 'विलक्षण अनुभूति' और 'आध्यात्मिक अनुभूति' को एक मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि यह 'विलक्षण अनुभूति' केवल लौकिक आनंद से ही नहीं आध्यात्मिक आनन्द से भी विलक्षण है"।[1]

इन मतों के औचित्य-अनौचित्य पर यहाँ विचार अपेक्षित नहीं है किन्तु भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य को आत्मिक आनन्द का प्रतिरूप माना गया है, इसीलिए उसे अनिर्वचनीय, अलौकिक, ब्रह्मानन्द सहोदर आदि विशेषण प्रदान किये गये हैं।

1 रससिद्धांत पृष्ठ संख्या 126